Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.gisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2025 GISRRJ | Volume 8 | Issue 4 | ISSN : 2582-0095
doi :https://doi.org/10.32628/GISRRJ258341

बौद्ध धर्म में 'भैषज्य गुरु' की चिकित्सा पद्धति

चन्द्र कला राय
शोध छात्रा, प्राचीन इतिहास विभाग,
इ० सि० स्व0 सं० राजकीय महाविद्यालय पचबस,बस्ती।

Article Info
Volume 8, Issue 4
Page Number : 04-08

Publication Issue :
July-August-2025

Article History
Accepted : 25 June 2025
Published : 10 July 2025

शोध सारांश – छठी शताब्दी ई०पू0 में अहिंसा के महागुरू के तौर पर लोग बुद्ध को जानते है। महात्मा बुद्ध ने जो दार्शनिक बाते कहीं, वह कुछ नया नहीं था, अपितु वैदिक धर्म में उत्पन्न विसंगतियों के कारण इसका प्रादुर्भाव हुआ जनमानस ब्राह्मणों के बनायें नियमों–कर्मकाण्डों के आडम्बर से तंग आ चुका था। तथागत ने एक ऐसा मार्ग बताया जिसके पथ पर चलकर मानव जन्म–मरण से मुक्ति पा सकता था, तथागत एक समाज–सुधारक थे उन्होंने अपने धम्म में, अहिंसा, करूणा, नैतिकता पर विशेष बल दिया बुद्ध का ध्येय सबका हित, सबका सुख था। इसके साथ ही बुद्ध ने प्राकृतिक चिकित्सा पर बल दिया। यह काल चिकित्सा पद्धति का समृद्ध काल था। शंकराचार्य ने तो उन्हें 'योगिनां चक्रवर्ती' कहा है।[1] यह उस दर्शन के प्रवर्तक थे, जो संसार का सबसे बड़ा दर्शन है।

कूट शब्द– महावैद्य, निग्रोधमृग–जातक, जेतवन, अशोक, कृतिम अंगों, कषाय।

बौद्ध देशों में बुद्ध को भैषज्य गुरु के रूप में जाना जाता है, जापान, चीन, तिब्बत में बुद्ध की मूर्तियाँ भैषज्य गुरु के रूप में प्राप्त होती है। इन मूर्तियों में बुद्ध के एक हाथ में चिकित्सा का प्रतीक हर्रा रहता है। बौद्ध साहित्य में अनेकत्र बौद्ध भिक्षुओं के अस्वस्थ होने की जानकारी प्राप्त होती है, तथागत ने स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहने को कहा है, भिक्षु–भिक्षुणियों के आहार–व्यवहार पर बल देने को कहते है, यह बौद्ध साहित्य में वर्णित है। बौद्ध साहित्य में भिक्षुओं के अस्वस्थ होने पर देखभाल के लिए परिचारकों का भी उल्लेख प्राप्त होता है, मुख्यतः विनयपिटक एवं महावस्तु चिकित्सा में इसका उल्लेख मिलता है। बौद्ध देशों में आज से हजार वर्ष पहले सैकड़ों औषधालय अस्पताल खोले गये थे, बुद्ध को बौद्ध ग्रन्थों में ऐसे वैद्य की पदवी मिली है। जो अपने ज्ञान और आचार मीमांसा द्वारा सभी प्राणियों के दुःखों का शमन करते हैं, बुद्ध का अन्तिम लक्ष्य–दुःख की स्थिति का अन्त है। तथागत सिर्फ यहीं सिखाते है– दुःख और दुःख निरोध। दुःख निरोध के शमन से व्यक्ति निर्वाण पद को प्राप्त–कर सकता है।

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)**

बुद्ध ने जब गृह का परित्याग किया था तो अपना अधिकांश समय उन्होने प्राकृतिक वातावरण को दिया जब हम तथागत के ध्यान लगाने के निर्देशों को अपनाते है. तो वह प्राकृतिक दुनिया दिखती है, जो हम सब के भीतर स्थित है। तथागत ने जीवन के हर पहलू पर ध्यान दिया, एक अच्छा स्वास्थ्य जीवन की सबसे बड़ी चिन्ता है। ऐसे कई उदाहरण देखें जा सकते है जिसमें भिक्षु बुद्ध की पवित्र सुत्त का जाप, प्रेम–कृपा के द्वारा ठीक हुए जिस प्रकार चिकित्सक रोगी को ठीक करने का प्रयास करता है। उसी प्रकार तथागत ने शिक्षा रूपी दवा जन–जन को देने का प्रयास किया। जिसके द्वारा नकारात्मक भावना, मानसिक बीमारियों पर काबू पाया जा सकता है। क्रोध, वासना, भ्रम (मोह) ईर्ष्या को बीमारी माना जाता है। तथागत ने बताया ये बीमारी दो तरह की है शरीर की मन की तथागत के समय में शल्य एवं चिकित्सा शास्त्र की स्थिति आयुर्वेद के किसी अंग से कम नहीं थी आकाशग्रोत्र एवं जीवक दो शल्यकर्ता द्वारा क्रमश सिर एंव भगन्दर के शल्यकर्म का उल्लेख मिलता है।[2]

स्वयं तथागत को महावैद्य कहा गया जो पृथ्वी पर जन–मानस के विभिन्न व्याधियों से मुक्त करने के लिए प्रयास करते रहे।[3] चिकित्सा क्षेत्र में प्राचीन काल में दो चिकित्सक सुश्रुत एव चरक का नाम साहित्यिक ग्रंथों में प्राप्त होता है। चरक शारीरिक चिकित्सा एवं सुश्रुत शल्य चिकित्सक थे। जीवक बौद्ध युगीन माने जाते है। जीवक का उल्लेख बौद्ध साहित्यों में प्राप्त होता है। जातकों में चिकित्सा विज्ञान के विषय में अनेक तथ्य प्राप्त होते है, मानव के विभिन्न अंगों–यथा यकृत, प्लीहा, उरस्थ, हृदय, वृक्क, आँत, आमाशय, मस्तिष्क का विवरण निग्रोध मृग–जातक में मिलता है[4]. जातको से ज्ञात होता है कि किस प्रकार एक वैद्य यह जानने का प्रयास करता था कि रोग का क्या कारण है यह जानकर ही चिकित्सक रोगी का इलाज करता था।[5]

चुल्ल हंस जातक से ज्ञात होता है की तथागत के पैर में चोंट लगी थी। जिसकी चिकित्सा जीवक ने की थी जिससे तथागत कष्ट से मुक्त हुए थे।[6] जीवक के द्वारा किये गये, उदर शल्य क्रिया, मस्तिष्क शल्य क्रिया का उल्लेख महावग्ग में प्राप्त होता है।[7] बौद्ध साहित्य में वर्णित है की बुद्ध ने प्रवास क्रम में अनाथपिण्डक के जेतवन में निवास करते थे, उसी समय शरद ऋतु में ठण्ड बुखार से भिक्षुगण के पीड़ित होने की सूचना मिलती है। की भिक्षु कमजोर, शक्तिहीन हो रहे थे, तथागत भाव–विभोर हो जाते हैं। आनन्द से यह जानकर आनन्द बताते है की भिक्षुगण शरद ऋतु के बुखार से ग्रस्त है। उनके द्वारा ग्रहण किया गया (खिचड़ी) यवागू नहीं पच रहा। गहन चिन्तन के उपरान्त बुद्ध ने शीतकालीन व्याधि से पीड़ित भिक्षुओं के लिए पच्च औषधि विधान बताया–घृत, मक्खन, तेल–खाड़–मधु को पूर्व में सेवन की अनुमति प्रदान किया।[8]

बौद्ध साहित्य में तथागत को चिकित्सक और शल्य चिकित्सक–दोनों रूप में वर्णित किया गया है। तथागत का विचार है की स्वास्थ्य की हानि सर्वोच्च हानि है।, भूख को बुद्ध ने सबसे बड़ी बीमारी माना है, यदि व्यक्ति बीमार है तो दवा उसको निरोगी कर सकती है। परन्तु भूख से व्याकुल व्यक्ति उस अवस्था में होता है,

जहाँ पर व्यक्ति का शरीर खुद को खाना शुरू कर देता है। बौद्ध भिक्खु –भिक्खुनी चिकित्सा शास्त्र में प्रवीण थे। बुद्ध को चिकित्सा शास्त्र में 'भैषज्य गुरू' भी कहते है, अशोक ने कलिंग युद्ध के पश्चात् बौद्ध धर्म अपनाया तथा इसने भी चिकित्सा शास्त्र को बहुत महत्व दिया तथा पशु–पक्षी, मानव, तथा जानवरों के लिए चिकित्सालय खोल रखे थे। जगह–जगह औषधालय तथा औषधीय पौधे लगाने के आदेश दिये थे।

महावग्ग जातक से साकेत के व्यापारी के पत्नी के सिर दर्द[9] एवं बवासीर के रोग से पीड़ित राजा बिम्बिसार के सफल औषधीय चिकित्सा का वर्णन प्राप्त होता है।[10] इसी प्रकार राजा चन्द्र प्रद्योत को जो पीलिया से ग्रसित थे। इनको औषधियुक्त घी से स्वस्थ किया था, कब्ज के रोग से पीड़ित तथागत को भी जीवक ने स्वस्थ किया था[11] सिवि जातक में जीवक के अतिरिक्त सीवक द्वारा नेत्र शल्य चिकित्सा का वर्णन इस जातक में मिलता है। बौद्ध साहित्य में असिलक्खन जातक में कृत्रिम अंगो का प्रत्यारोंपण का उदाहरण मिलता है।[12] अश्वघोष के अनुसार तथागत का मानना है कि भोजन का असंतुलित होना मौसम, अच्छे मित्रों का न होता, अनुपयुक्त निवास स्थान सोचने–समझने की स्थिति – परिस्थिति से भी मनुष्य रोगी हो सकता है इसके लिए बुद्धि और ज्ञान के प्रयोग द्वारा मानसिक रोग का इलाज किया जा सकता है। बुद्ध ने कहा स्वास्थ्य ही सर्वोच्च लाभ है। तथागत ने भिक्षुओं को वो सब कुछ ग्रहण करने की अनुमति दी, जो स्वास्थ्य की दृष्टि से लाभदायक थे, इसके अन्तर्गत जड़ी–बूटी, विभिन्न प्रकार के रस (कसाय) फल. पत्ते तथा आवश्यकता पड़ने पर पशुओं की चर्बी, रक्त, मांस व मदिरा की अनुमति भी दी थी। तथागत ने रुग्णोपचार के लिए सुअर की चर्बी, गधे की चर्बी, मछली की चर्बी के सेवन की अनुमति दी, कुसमय सेवन को लेकिन दोषयुक्त बताया।[13] इसी प्रकार कषाय एवं मूल औषधि विधान में–अदरक, हल्दी, नागर मोथा औषधियों के सेवन का विधान बताया। बौद्ध साहित्य में सील बट्टे पर कूट कर इसका चूर्ण बनाने का उल्लेंख है।[14] विष को ग्रहण कर लेने वाले एक भिक्षु को तथागत ने गोबर का काढ़ा पिलाया था, जो शायद उल्टी लाने के लिए दिया जाता था। महावग्ग जातक में नेत्र रोग, वातरोग, सिरदर्द, शीतकालीन ज्वर, विभिन्न चर्म रोग, जैसे खुजली, फोड़ा, शरीर से दुर्गन्ध, जुलपुत्ती आदि रोगों व उनके उपचार में आने वाली औषधियों के निर्माण का विस्तृत विवरण प्राप्त होता है।[15] कौटिल्य के अर्थशास्त्र में कषाय के रस जिसमें नीम, कषाय, कूट कषाय, परवल कषाय आदि का उल्लेख किया है।[16]

शल्य चिकित्सा के साथ ही साथ औषधि चिकित्सा के सन्दर्भ में जातको से अनेक तथ्य प्राप्त होते है अतिसार तथा पेचिस का कारण अधिक भोजन तथा असमय भोजन को बतलाया गया है। इसके उपचार के लिए मधु शक्कर एंव खालिश दूध से बनी खीर को इसकी औषधि के रूप में बताया गया है। एक औषधि और है जिसमें बिना नमक डाले पत्तो को उबाल कर बिना छौंक दी जाये[17] उदर वायु से पीड़ित रोगी के लिए तथागत ने बताया रोहू (मछली) का सूप नये घी में पका कर चावल से खाया जाय[18] इसी जातक ग्रन्थो से यह स्पष्ट होता है कि औषधि के रूप में जड़ी–बूटियों एव वृक्षों के छाल का प्रयोग करते थे, महासुतजोम जातक के अनुसार चिकित्सक के द्वारा घाव को साफ कर पेड़ की छाल घिसकर बनायी गयी औषधि लगाने का वर्णन

प्राप्त होता है।[19] ललित विस्तर में जरा–मरण को दुःख माना गया है अर्थात (रोग–रूप) व्याधिजन्य रोग पीड़ा है। महायान ग्रन्थों में ताप ज्वर से पीड़ित राजा को वैद्य ने गोशीर्ष चन्दन लगाने का निर्देश दिया जिसके लेपन से राजा स्वस्थ हो गया।[20] तथागत ने इस संसार को दुःखमय बताया तथा निवृत्ति के लिए चार आर्य सत्यों का उपदेश दिया अभिधम्म कोष व्याख्या के व्याधिसुत्र में तथागत की तुलना भिषक से की गयी है। ये चार आर्य सत्य वैद्यक के चार अंग है, रोग, निदान, स्वस्थता उपचार।[21]

तथागत स्वंय दार्शनिक चिकित्सक थे जिस प्रकार से एक चिकित्सक रोगी को ठीक करने के लिए कुछ तथ्यों को पता करता है जिससे रोगी को स्वस्थ कर सकें। उसी प्रकार तथागत ने भी इस संसार को दुःखमय बताया बौद्ध दर्शन में दुःखो को समस्त कष्टों का कारण माना गया है। बुद्ध ने दुःखों की निवृत्ति के लिए चार आर्य सत्यों का ज्ञान दिया, जिसके द्वारा दुःखों से व्यक्ति मुक्ति पा लेता है। जिस प्रकार चिकित्सक व्यक्ति के व्याधिस्वरूप को जानकर रोग का निवारण जान लेता है। उसका शमन करने में सक्षम होता है। उसी प्रकार तथागत को बौद्ध ग्रन्यों में ऐसे ''महाभिषक'' जैसी महान पदवी से विभूषित किया गया है। जो अपने ज्ञान आचार मीमांसा के द्वारा संसार के सभी प्राणियों के दुःखों का नाश करते है और जनमानस को स्वस्थ रहने का मार्ग बताते है। जिस पर चलकर वह निर्वाण प्राप्त करने में समर्थ हो। इस प्रकार यह कहा जा सकता है की तथागत ने अपने 'भैषज्य गुरु' नाम को चरितार्थ किया।

सन्दर्भ ग्रन्य सूची –

1. शंकराचार्य, दशावतार स्तोंत श्लोक–1
2. आयुर्वेद का इतिहास एवं परिचय, डा० विद्याधर शुक्ल एवं डा० रविदत्त त्रिपाठी, 2010 चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान दिल्ली पृ० 312–131
3. मित्रा, राजेन्द्र लाल, ललित विस्तार (466/12–13(एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल कलकत्ता (1877)
4. निग्रोध मृग जातक, पृ० 146
5. जातक द्वितीय पृ० 214, चतुर्थ, पृ०/171
6. जातक पंचम, पृ० 333
7. महावग्ग – 8,4,7
8. विनय पिटक, (महावग्ग महाबोधि ग्रन्थमाला–3 सारनाथ वाराणसी, 1935, पृ० 215–225
9. महावग्ग जातक 8.2.5
10. महावग्ग जातक 8,3,6
11. महावग्ग जातक 8.1.1.25
12. जातक चतुर्थ, पृ० 407

13. जातक प्रथम, पृ०,457
14. विनय पिटक महावग्ग (भिक्षु जगदीश कश्यप द्वारा सम्पादित नालंदा देवनागरी, पृ० 293–95 पालि पाब्लिकेशन बोर्ड बिहार–1956
15. अत्रि देव विद्यालंकार, आयुर्वेद का वृहद् इतिहास ग्रन्थ माला 33, पृ० 91–110, 1960।
16. कौटिल्य अर्थशास्त्र –1.20।
17. जातक तृतीय पृ० 143–144, जातक पंचम, पृ० 441
18. जातक द्वितीय, पृ० 393
19. जातक द्वितीय, पृ० 117, पंचम, पृ० 504
20. मूल सर्वा० 1, चीवर, पृ० 192
21. डा० ए० के कुमार स्वामी–बुद्धा एण्ड दि गास्पल ऑफ बुद्धिस्म पृ० 81